B.Ed 1st year (21-23)
Paper - C1 - Childhood and Growing up

* बालकों में भावात्मक या संवेगात्मक विकास :-
(Emotional Development in child)

Introduction :-

व्यक्ति का संपूर्ण विकास समाज में ही होता है। अर्थात विकास के सभी अवस्थाओं में व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है जिसमें उसे तरह-तरह की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है।

इसप्रकार व्यक्ति अपने विभिन्न अवस्थाओं जैसे - शैशवावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था आने तक भिन्न-भिन्न सांवेगिक क्रियाओं को करते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ता है। अतः संवेग व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करता है जो उसकी मानसिक क्रियाओं से संबंधित होता है। जैसे - व्यक्ति में उत्तेजना, दुःख, भय, जिज्ञासा, प्रेम, ईर्ष्या इत्यादि। उपरोक्त बिंदुओं को क्रमबद्ध अध्ययन के माध्यम से जान सकेंगे —

* संवेग का अर्थ (Meaning of Emotion) :-

संवेग शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Emotion' से बना है जो लैटिन भाषा के शब्द 'Emover' से लिया गया है जिसका अर्थ होता है "Out या To Move"।

अर्थात भड़क उठना या उत्तेजित हो जाना।

इसप्रकार संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था है जिसमें कुछ शारीरिक प्रतिक्रियायें जैसे हृदयगति में परिवर्तन, रक्तचाप में परिवर्तन के साथ-साथ हाथ-पैर, आँख, चेहरा इत्यादि में भी परिवर्तन होता है। अतः हम कह सकते हैं कि संवेग एक भावात्मक अनुभव है जो व्यक्ति में सामान्यतः आंतरिक समायोजन और मानसिक तथा शारीरिक रूप से उत्तेजित दशाओं को दर्शाता है जिससे उसके बाहरी व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है जैसे - भय में दुःख का भाव, खुशी में सुखद भाव इत्यादि।

* संवेग की परिभाषा :-

* मैलडाउई के अनुसार :- "संवेग क्रियाओं का उत्तेजक है"

* इंगलिश तथा इंगलिश के अनुसार :- "संवेग एक जटिल भाव की अवस्था होती है जिसमें कुछ खास-खास शारीरिक एवं ग्रंथिय क्रियायें होती है।"

* जरसिल्ड के शब्दों में :- "किसी भी प्रकार के आवेश आने, भड़क उठने तथा उत्तेजित हो जाने की अवस्था को संवेग कहते है।"

* संवेग की विशेषताएँ (characteristics of Emotions) :-

(1) संवेगो में व्यापकता पाई जाती है यह पशु-पक्षी, बालक-वृद्ध सभी में पाये जाते है।
(2) मनुष्य की सभी दशाओं एवं अवस्थाओं में संवेग पाये जाते है।
(3) संवेग मनोशारीरिक होता है।
(4) संवेगों में अस्थिरता पाई जाती है।
(5) किसी प्रकार का संवेग जाग्रत करने के लिए भावनाओं का होना जरूरी है।
(6) संवेगों से आंतरिक ऊर्जा प्राप्त होती है।
(7) संवेगो पर परिस्थिति और ग्रंथियों का प्रभाव पड़ता है।
(8) धनात्मक (Positive) संवेगो से सुख एवं ऋणात्मक संवेगों (Negative Emotions) से कष्ट की अनुभूति होती है।
(9) संवेगात्मक विकास प्राणी के व्यवहारों से संबंधित होता है।
(10) संवेग की दशा में बुद्धि काम नहीं करती।

* संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors effecting of childhood of Emotional Development)

→ स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास
→ बुद्धि
→ पारिवारिक वातावरण
→ व्यक्तित्व
→ विद्यालय का वातावरण एवं अध्यापक
→ सामाजिक विकास एवं साथियों का साथ
→ पास-पड़ोस, समुदाय
→ लिंग
→ सामाजिक-आर्थिक स्तर
→ परिपक्वता

* बाल विकास के विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास :-

→ (1) शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास
→ (2) बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास
→ (3) किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास

(1) शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास :-

(1) शिशु जन्म के उपरांत रोता, चिल्लाता तथा पैर पटकता है, इसतरह से वो जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार को प्रदर्शित करता है।
(2) शिशु का संवेगात्मक व्यवहार अत्यधिक अस्थिर होता है।
✓ जैसे - शिशु गोद में आने के लिए रोता है तथा गोद में आने

के लिए रोता है तथा गोद में आने के बाद चुप हो जाता है। परन्तु जैसे-जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है वैसे-वैसे उसके संवेगों में स्थिरता आ जाती है।

(3) आरंभ में शिशु के संवेग काफी तीव्र होते हैं किंतु धीरे-धीरे यह तीव्रता कम हो जाती है जैसे दो या तीन माह का शिशु तब तक रोता रहता है जब तक कि उसकी इच्छा पूरी नहीं हो जाती है।

(4) आरंभ में शिशु प्रसन्न होने पर केवल मुस्कुराता है परन्तु कुछ बड़ा होने पर वह हँसकर अपनी प्रसन्नता दिखाता है, विभिन्न प्रकार की आवाजों को निकालता है।

(5) आरंभ में शिशु के संवेगों में अस्पष्टता होती है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता है उनमें स्पष्टता आ जाती है।

(6) 0-2 वर्ष का शिशु साँप या अन्य हानिकारक जीवों से नहीं डरता परन्तु धीरे-धीरे आयु बढ़ने पर उसे भय का ज्ञान होता है।

इसप्रकार शैशवावस्था में बालक का संवेगात्मक विकास धीरे-धीरे स्पष्ट एवं निश्चित होने लगता है।

* बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास :-

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास के स्वाभ परिवर्तन भी होते रहते हैं, इस अवस्था में आते ही संवेगों में सामाजिकता का भाव आ जाता है। उन्हें इस बात का ज्ञान होने लगता है कि सामाजिक जीवन में कब किस प्रकार के भावों को व्यक्त करना उचित है अर्थात बालक संवेगों पर नियंत्रण करना आरंभ कर देते हैं।

अतः समाज की प्रशंसा प्राप्त करने और निंदा से बचने के लिए वे डाह प्रेम, स्नेह, सहानुभूति या द्वेष जैसे संवेगों को प्रकट करना होता है वहीं कुछ ये

जैसे - निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझेंगे —

(1) बाल्यावस्था में बालकों में जिज्ञासा, हर्ष, भय, ईर्ष्या क्रोध तथा स्नेह आदि संवेगों में तीव्र वृद्धि होती है।

(2) इस अवस्था में परिवार, समाज या विद्यालयों के कठोर नियमों से बालक में निराशा और असहायपन जैसे संवेगों का विकास होने लगता है।

(3) बालकों को अपने कार्य में सुख - दुःख सफलता और असफलता जैसे संवेगों की अनुभूति होती है।

(4) 6 - 7 वर्ष की आयु वाले बालकों में जिज्ञासा जैसे भावों का विकास होने लगता है।

(5) इस अवस्था में बालकों में क्रोध, स्नेह और ईर्ष्या जैसे संवेग तीव्रता से उत्पन्न होते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :

इस अवस्था में किशोर - किशोरियाँ बहुत संवेदनशील होते हैं, यह ऐसी अवस्था है जिसमें बालकों का व्यवहार आँधी - तूफान से भरी हुई गतिशील होती है। इस अवस्था में बालकों में संवेगात्मक शक्ति का विकास तेजी से होता है, तथा उन्हें अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना बहुत कठिन होता है, यौन ग्रंथियों के विकास के फलस्वरूप उनमें अनेक शारीरिक परिवर्तन देखने को मिलता है जैसे —

(1) किशोरों में संवेगात्मक अस्थिरता के कारण समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

(2) इस अवस्था में उनका जीवन भावात्मक होता है उनमें आत्म - सम्मान की भावना विकसित होती है, इसलिए उनके आत्म-सम्मान पर लगी ठेस को वो बर्दाश्त नहीं कर पाते।

(3) किशोरावस्था में प्रेम संवेग बढ़ जाता है। इस अवस्था में बालक अपने से विपरित लिंग के प्रति आकर्षित होने लगते है।

(4) किशोरावस्था में बालक प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति आदि संवेगों को स्थायी रूप से प्राप्त कर लेते हैं तथा किशोर इन पर नियंत्रण नहीं रख पाता है।

(5) इस अवस्था में बालक कल्पनाशील होने के कारण दिवा स्वप्नों में रहो जाता है, उसी के माध्यम से अपने संवेगों को प्रकट करता है।

* बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षकों की भूमिका :-

(1) शारीरिक विकास की दशा का संवेगात्मक विकास पर गहरा प्रभाव होता है। भूख, प्यास, थकान, पीड़ा, रोग आदि अवस्थाओं में बालक को क्रोध आता है अतः अध्यापकों द्वारा ऐसे बालकों की आलोचना नहीं करनी चाहिए उन्हें अच्छे तरह से समझना चाहिए।

(2) बालकों के संवेगात्मक विकास में स्नेह का महत्वपूर्ण स्थान होता है अतः अध्यापकों को चाहिए कि बालक से स्नेहपूर्ण व्यवहार करें।

(3) बालकों के विकास के विभिन्न अवस्थाओं में संवेगों का विकास तीव्र गति से होता है अतः शिक्षकों को उनकी समस्याओं को जानकर नम्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

(4) बालकों के संवेगों पर नियंत्रण रखने के लिए शिक्षकों को उचित विधियों और सरल तरीकों का प्रयोग करना चाहिए।

(5) संवेगों पर नियंत्रण रखने के लिए शिक्षकों को चाहिए की वो बालकों को स्वतंत्र आगेबढ़ने का अवसर प्रदान करें।